समकालीन स्त्री : अस्मिता का संघर्ष और अल्पना मिश्र का कथा साहित्य

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

के कला संकाय के अन्तर्गत हिन्दी विषय में

पी.एच.डी. की उपाधि हेतु शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशक

डॉ. सियाराम शर्मा

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी

शासकीय दानवीर तुलाराम महाविद्यालय,

उतई, दुर्ग (छ.ग.)

सह निर्देशक

20.7.16

डॉ. श्रीमती श्रद्धा चन्द्राकर

प्राध्यापक- हिन्दी

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वाशा. स्नातकोत्तर.

महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

मीनाक्षी

मीनाक्षी चतुर्वेदी

अनुक्रमांक : **201661**

प्राचार्य

20-7-16

डॉ. सुशील चंद्रतिवारी

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वाशा. स्नातकोत्तर. महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

Principal

Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous

College, Durg (C.G.)

शोध केन्द्र :-

शास. विश्वनाथ यादव तामस्कर स्वाशा. स्नातकोत्तर. महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

1. शोध–प्रबंध का शीर्षक –

समकालीन स्त्री : अस्मिता का संघर्ष और

अल्पना मिश्र का कथा साहित्य

2. प्रस्तावना –

यह ऐतिहासिक तथ्य है कि हर प्राचीनतम समाज मातृसत्तात्मक रहा है। सभ्यता के विकास के क्रम में निजी सम्पत्ति और परिवार के उदय के साथ स्त्रियों को मुख्य उत्पादक कार्यों से अलग कर घर की चहारदीवारियों के भीतर कैद कर दिया गया। उनकी भूमिका प्रजनन, बच्चों के पालन–पोषण, घर के कार्यों और पुरूष की दैहिक जरूरतों तक सीमित कर दी गयी। वह सिर्फ किसी की माँ, पत्नी, बहन और बेटी बनकर रह गयी। अपना व्यक्तित्व, अपनी पहचान और अपनी दक्षता खोकर वह पुरूषों की सम्पत्ति और वस्तु में तब्दील होती चली गयी। पूरे सामंती समाज में स्त्री की इच्छा, आकांक्षा और स्वतंत्रता का अपहरण कर उसे पुरूषों का गुलाम बना दिया गया। अपनी जीवन, अपने शरीर पर भी वह अपने अधिकारों से वंचित रही। पुरूष उसका स्वामी रहा और वह दासी।

स्थायी रूप से दास और गुलाम बनाये रखने का सबसे कारगर तरीका मानसिक गुलामी है। धर्म, संस्कृति,साहित्य और विविध कलाओं तथा परंपरा और परिपाटियों के नाम पर स्त्री की मानसिक गुलामी को बढ़ावा दिया गया। हर तरह से उसे कमजोर और लाचार बनाये रखने की साजिशें रची गयी । उसे अबला कहा गया। वह पुरूष प्रभुत्ववादी समाज के साँचों और खाँचों के अनुरूप खुद को ढालती रही और पुरूष के द्वारा रची और गढ़ी गयी अपनी छवि में ही खुद को तलाशती रही।

पूँजीवाद के उदय के साथ–साथ ज्ञान–विज्ञान का विकास हुआ। कल–कारखाने खुले। सामंती समाज की जगह नये औद्योगिक समाज की नींव पड़ी। शिक्षा का विकास हुआ। राजतंत्र के ढाँचे को तोड़कर नयी लोकतांत्रिक व्यवस्था–स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे के नारे के साथ सामने आयी। स्त्रियाँ घर की चहारदीवारी से बाहर आयी। शिक्षित हुई और पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर उत्पादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्त्री और पुरूष दोनों को एक दूसरे को समझने का सुअवसर प्राप्त हुआ। इसी के साथ स्त्री–पुरूष की बराबरी का सिद्धान्त सामने आया।

प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय समाज, इतिहास और संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। उसकी परतंत्रता और गुलामी के चिन्ह जगह–जगह मौदूर हैं। वेदों , उपनिषदों,पुराणों, रामायण, महाभारत के बहुत सारे प्रसंगों, मिथकों और पात्रों के विश्लेषण से स्त्री पराधीनता की पीड़ा को समझा जा सकता है। सती प्रथा, विधवा प्रथा, देवदासी प्रथा, दहेज प्रथा और वेश्यावृत्ति जैसी कुरीतियाँ हमारे समाज में पूर्व में भी मौजूद थीं। लेकिन स्वाधीनता आन्दोलन और आधुनिकता के विकास के साथ इन समस्त कुरीतियों के विरूद्ध आवाज उठने लगी। इनके खिलाफ कविताएँ, कहानियाँ, उपन्यास और नाटक लिखे जाने लगे और स्त्री चेतना का विकास हुआ ।

हमारा समकालीन भारतीय समाज एक संक्रमणशील समाज है। एक तरफ जहाँ आधुनिक और अतिआधुनिक स्थितियाँ मौजूद हैं तो दूसरी तरफ सामंती सोच, विचार और व्यवहार आज भी घर, परिवार, सामाजिक , शैक्षिक और राजनीतिक संस्थाओं में अपनी गहरी जड़ें जमाये हुये हैं। एक तरफ स्त्री हर क्षेत्र में अपनी क्षमता और प्रतिभा को प्रमाणित कर नयी पहचान बना रही है तो दूसरी तरफ उसे जन्म लेने के अधिकार से भी वंचित किया जा रहा है। अपनी स्वतंत्रता,आजादी और बराबरी के अधिकार के लिए उसे कदम–कदम पर संघर्ष करना पड़ रहा है। समकालीन भारतीय स्त्री घर और बाहर के दो कठिन पाटों के बीच पिस रही है। आज उसकी भूमिकाएँ नितांत बदल गयी है पर घर–परिवार से लेकर विविध सामाजिक, सांस्कृतिक, सांस्कृतिक,राजनीतिक संस्थाओं के भीतर उससे जुड़े सोच और मानसिकता में यथोचित बदलाव नहीं आये हैं। वह आज भी गैर बराबरी, बलात्कार, दहेज हत्याओं, भ्रूण हत्याओं की शिकार है। अपनी अस्मिता, अपनी पहचान, अपनी स्वतंत्रता और आजादी के लिए उसे कठिन संघर्ष के दौर से गुजरना पड़ रहा है।

समकालीन स्त्री शिक्षित, बौद्धिक, समझदार और संवेदनशील है। वह अपने यथार्थ, अधिकार और बराबरी के हक के प्रति सतर्क है पर हमारे पुरूष प्रभुत्ववादी समाज के सोच– विचार और व्यवहार में अपेक्षित बदलाव नहीं आया। अतः आज की स्त्री का संघर्ष ज्यादा कठिन, तीखा और पीड़ा जनक है। आज वह घर –परिवार, सत्ता और व्यवस्था के साथ लगातार टकरा रही है। एक तरफ पूंजीवाद ने उसे आजाद किया तो दूसरी तरफ उसे पूंजी का गुलाम बना दिया गया।

यों तो मीरा जैसी कवियित्री ने मध्य युग में अपने अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए प्रतिरोध और संघर्ष किया था। आधुनिकता के आगमन के साथ स्त्री–पुरूष दोनों तरह के लेखकों ने इस संघर्ष को व्यापक बनाया। प्रेमचन्द, निराला, जैनेन्द्र, यशपाल जैसे लेखकों ने अपनी– अपनी तरह से स्त्री मुक्ति और आजादी के सवाल को उठाया। आगे चलकर सावित्री बाई फूले, तारा बाई शिंदे की परंपरा में महादेवी वर्मा, उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा, प्रभा खेतान, अलका सरावगी जैसी स्त्री लिखिकाओं ने भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति को ज्यादा जटिलता के साथ समझने का प्रयास किया। नवें दशक में अनामिका, कात्यायनी, गीतांजली, श्री, सारा रॉय और अल्पना मिश्र जैसी कथा लेखिकाओं ने आधुनिक स्त्री की समस्त बौद्धिकता और समझदारी के साथ समकालीन समाज में स्त्री की स्थिति, अस्मिता के संघर्ष और उसके समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को यथार्थपरक ढंग से समझने का प्रयास किया ।

अल्पना मिश्र ने नवें दशक की अत्यन्त सशक्त कथा लेखिका हैं। वे स्त्री–मुक्ति को सिर्फ देह की मुक्ति के साथ जोड़कर नहीं देखती। उनकी कहानियों की स्त्री पुरूष से होड़ नहीं लेती। वे अत्यंत संवेदनशील ढंग से उसकी अदृश्य परतों को उभार कर सामने लाती है। अल्पना मिश्र की कहानियों और उपन्यासों में समकालीन स्त्री की मुक्ति की छटपटाहट के साथ घर–परिवार से लेकर सत्ता और व्यवस्था तक से उसके संघर्ष के विविध रूप देखने को मिलते हैं।

अल्पना मिश्र की कहानियाँ स्त्री–पुरूष सम्बन्धों के बीच अलगाव, अपरिचय एवं परायेपन के फैले उजाड़ का जायजा लेती है। ये स्त्री मन के गहरे अँधेरे, मनो जगत की संरचनाओं और उसे बीमार बना देने वाली स्थितियों की पड़ताल की कहानियाँ भी है। सत्ता, व्यवस्था, समाज और परिवार के द्वारा अपने मूल्यों, मान्यताओं तथा विचारों के अनुरूप स्त्री के अनुकूलन तथा व्यक्तित्वकरण के विराट साँचों और सघन घेरेबंदियों की जटिल संरचनाओं को बहुत ही संवेदनशील ढंग से ये कहानियाँ पहचानती, समझती और परत दर परत खोलती हैं। इन समझ के एहसास के भीतर से उभरता है – स्त्री की देह, व्यक्तित्व कामनाओं और इच्छाओं पर उसके अधिकार का सवाल । घर स्त्री के लिए एक जेल है तो बाहर और पूँजी और बाजार का विशाल तंत्र उसकी स्वतंत्रता के शिकार के लिए हर ओर अदृश्य जाल फैलाये उसकी प्रतिक्षा कर रहा है। जेल और जाल के बीच साँसत में फँसी भयभीत और चौकन्नी स्त्री के मनोभावों , अनुभूतियों, स्वप्नों, इच्छाओं और कामनाओं के रंग रेशे से अल्पना मिश्र की कहानियाँ बुनी गयी है। व्यक्ति, परिवार, समाज और सत्ता से जुड़े कई सवाल और यथार्थ के विविध पहलू एक–दूसरों से जड़ों की तरह उलझे हैं। अल्पना मिश्र की कहानियाँ और उपन्यास आपस में जुड़ते हैं और हमारे समकालीन समाज में स्त्री की स्थिति का नया भाष्य रचते हैं।

प्रस्तावित शोध प्रबंध का मुख्य आयोजन :–

अल्पना मिश्र की कहानियाँ और उपन्यासों के माध्यम से समकालीन भारतीय स्त्री की अस्मिता के संघर्ष, उसके समक्ष उत्पन्न चुनौतियों को भसझना और पहचानना है। साथ ही साथ वर्तमान में भारतीय समाज के स्त्री विषयक यथार्थ के परिपेक्ष्य में उनकी कहानियों का विवेचन, विश्लेषण कर मूल्यांकन करना भी है।

प्रस्तावित शोध प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण किया जायेगा :–

प्रथम अध्यायः– समकालीन भारतीय समाज में स्त्री अस्मिता के संघर्ष के विविध स्वरूप।

द्वितीय अध्यायः– समकालीन हिन्दी कथा साहित्य – स्त्री अस्मिता की पहचान और संघर्ष।

तृतीय अध्यायः– अल्पना मिश्र व्यक्तित्व और कृतित्व ।

चतुर्थ अध्यायः– समकालीन स्त्री अस्मिता का संघर्ष और अल्पना मिश्र का कथा और औपन्यासिक साहित्य।

पंचम अध्यायः– अल्पना मिश्र की कहानियों एवं उपन्यासों की भाषा और शिल्प ।

षष्ठम अध्यायः– स्त्री अस्मिता के संघर्ष की दृष्टि से समकालीन हिन्दी कहानी में अल्पना मिश्र का योगदान ।

उपसंहार :-

आधार एवं संदर्भ गंथों की सूची ।

(3) सम्बन्धित क्षेत्र में पूर्व में किये कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :-

मेरा शोध कार्य अल्पना मिश्र के कथा साहित्य पर केन्द्रित है। मेरी जानकारी में उनके कथा साहित्य पर अब तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं है। हॉ, उनकी कथा संग्रह – 'भीतर का वक्त' तथा 'छावनी में बेघर' पर कुछ समीक्षायें (पक्षधर , – अंक– 7, जनवरी 2009 तथा 'बहुवचन', अंक–25, अप्रैल–जून 2010) अवश्य प्रकाशित है। ये समीक्षायें उनकी कहानियों की विशिष्टता को उजागर करती है। पर स्त्री अस्मिता के संघर्ष को केन्द्र में नहीं रखती। अल्पना मिश्र के कथा साहित्य पर किसी और शोध कार्य की जानकारी भी मुझे नहीं है । स्त्री अस्मिता के संघर्ष और उससे जुड़े सवालों पर हंस, वसुधा आदि पत्रिकाओं में कुछ लेख प्रकाशित हैं। जिनसे हमारे शोध में सहायता मिल सकती है। कुल मिलाकर हमारे शोध कार्य के प्रस्तावित विषय पर इसके पूर्व नहीं के बराबर कार्य हुये हैं। इस दृष्टि से यह नवीन और मौलिक कार्य होगा।

(4) प्रस्तावित शोध कार्य का उद्देश्य :-

प्रस्तावित शोध कार्य का मूल उद्देश्य समकालीन भारतीय समाज में स्त्री अस्मिता के उपर हो रहे कुठाराघातों, उसके व्यक्तित्व हरण की साजिशों और उसकी पहचान धूमिल करने वाले प्रयासों को अल्पना मिश्र की कहानियों से समझने की कोशिश करना है। इसके साथ ही अपने कर्म, बौद्धिकता, विचारशीलता और साहस के साथ स्त्रियों के द्वारा परिवार और समाज में मौजूद स्त्री विरोधी मानसिकता, सोच और व्यवहार के विरूद्ध किये जा रहे संघर्ष की पहचान करना भी है। इससे यह तय हो पायेगा कि समकालीन भारतीय स्त्रियों के समक्ष अपनी अस्मिता की पुनः प्राप्ति हेतु किस प्रकार की कोशिशों का जरूरत है। उनके समक्ष किस प्रकार की चुनौतियां हैं। इससे स्त्री की बेखौफ आजादी और मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा और घर परिवार और समाज ज्यादा स्वस्थ, सुखी और संतुलित हो सकेगा।

(5) सम्बन्धित क्षेत्र में किये गये महत्वपूर्ण कार्य :-

पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय एवं अन्य विश्वविद्यालयों में विभिन्न महिला कथाकारों पर शोध कार्य हुये हैं। लेकिन अल्पना मिश्र के कथा साहित्य पर कोई महत्वपूर्ण शोध कार्य मेरी जानकारी में नहीं हुये हैं। स्त्री अस्मिता से जुड़े प्रश्नों, चुनौतियों और निरन्तर जारी घर से बाहर तक के संघर्षों पर समय–समय पर निबंध और लेख प्रकाशित होते रहे हैं। राजेन्द्र यादव द्वारा संपादित हंस ने अपने कई अंकों में स्त्री अस्मिता से जुड़े विषयों को प्राथमिकता दी। वसुधा ने महिला कथाकारों पर केन्द्रित विशेषांक प्रकाशित किये। चारू गुप्ता ने "स्त्रीत्व से हिन्दुत्व तक" अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक में औपनिवेशिक भारत में यौनिकता और साम्प्रदायिकता पर उल्लेखनीय कार्य

किया । राधा कुमार ने सन् 1800 से 1990 तक के भारतीय स्त्री के संघर्ष का इतिहास लिखा। इन पुस्तकों से स्त्री अस्मिता से जुड़े सवालों और संघर्षों को समझने में मदद मिलेगी। जिससे अल्पना मिश्र की कहानियों को जोड़कर विवेचित, विश्लेषित और मूल्यांकित किया जा सकता है।

शोध कार्य के लिए प्रस्तावित शोध प्रविधि :-

प्रस्तावित शोध कार्य समाज शास्त्री होने के साथ-साथ आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक भी है। "साहित्य के समाज शास्त्र" जैसे आधुनिक ज्ञान के अनुशासनों से इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मदद मिल सकती है। यह कार्य एकायामी न होकर, अंतार्नुशास्नीय है।

(7) प्रस्तावित शोध कार्य के आशातीत परिणाम :-

स्त्री हमारी आधी आबादी का हिस्सा है। भारतीय समाज मूलतः पुरूष प्रभुत्ववादी समाज रहा है। हमारी स्त्रियों को उतनी शिक्षा, स्वतंत्रता और आजादी नहीं मिली जिसमें उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास हो सके। घर, परिवार, सत्ता और व्यवस्था में अभी भी उसे बराबरी और सम्मान का अधिकार प्राप्त नहीं है। प्रस्तावित शोध इस परिकल्पना को प्रमाणित कर सकता है कि भारतीय समाज में स्त्रियों को अपनी अस्मिता और क्षमता की पहचान और पुनः प्राप्ति के लिए लम्बे संघर्ष के दौर से गुजरना होगा। उसकी अपहरित अस्मिता उसे लौटायी भी नहीं जा सकती। उसे संघर्ष के माध्यम से उसे प्राप्त करना होगा। अतिशय सहनशीलता समर्पण और सेवा के भाव के प्रति उसे सतर्क रहना होगा। अपनी बराबरी के अधिकार के लिये लम्बे समय तक उसे निरंतर जूझना और टकराना होगा। संविधान और कानून ने उसे पुरूष की बराबरी का अधिकार दिया है पर घर-परिवार से लेकर समाज- सत्ता और व्यवस्था से उसकी लम्बाई आगे भी जारी रहेगी। सभ्यतायें तेजी से बदलती है पर वैचारिक परिवर्तन में समय लगता है।

(8) आधार ग्रंथ :-

1. मिश्र अल्पना – " भीतर का वक्त " नयी दिल्ली ज्ञानपीठ प्रकाशन 2006
2. मिश्र अल्पना – " छावनी में बेघर " नयी दिल्ली ज्ञानपीठ प्रकाशन 2008
3. मिश्र अल्पना – " कब्र भी कैद और जंजीरें भी " नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2012
4. मिश्र अल्पना – " अन्धियारे तलछट में चमका " पंचकूला : आभार प्रकाशन 2014

संदर्भ ग्रंथ :-

1. बोउवार, द सीमोन – स्त्री उपेक्षिता, दिल्ली – सारस्वती विकार, 1990
2. ग्रीचर, जमैन– विद्रोही स्त्री, नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन
3. मिल, जॉन स्टुअर्ट स्त्रियों की पराधीनता, नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन 2002
4. कुमार राधा – स्त्री संघर्ष का इतिहास,नयी दिल्ली – वाणी प्रकाशन 2009
5. गुप्ता चारू – स्त्रीत्व से हिन्दुत्व तक, नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन 2012
6. वोन्सेट क्राफ्ट मेरी– स्त्री अधिकारों का ,नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन 2003
7. मारगन, एलीन – नारी का अवतरण, मेरठ : संवाद प्रकाशन 2009
8. राजवाड़े विश्वनाथ काशीनाथ– भारतीय विवाह संस्थाओं का इतिहास नयी दिल्ली – वाणी प्रकाशन
9. ग्रीचर, जमैन– बधिया स्त्री, नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन 2005
10. एक अभात हिन्दु औरत – सीमन्तनी उपदेशक, ,नयी दिल्ली – वाणी प्रकाशन
11. शिंडे तारा बाई – स्त्री पुरूष तुलना , नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन
12. खेतान प्रभा – उपनिवेश में स्त्री , नयी दिल्ली –राजकमल प्रकाशन

13. यादव राजेन्द्र, खेतान प्रभा - पितृसत्ता के नये रूप, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
14. यादव राजेन्द्र - आदमी की निगाह में औरत, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
15. यादव, राजेन्द्र, वर्मा अर्चना - अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
16.कुमार कृष्ण - चूड़ी बाजार में लड़की, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
17. के. पी. प्रमीला - स्त्री यौनिकता बनाम आध्यात्मिकता, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
18. पाण्डेय मृणाल - देश की राजनीति से देह की राजनीति तक, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
19. माहेश्वरी, सरला - नारी प्रश्न, नयी दिल्ली राजकमल प्रकाशन
20. आनायिका - त्रिया चरित्रः हत्याकांड, पंचकूलाः आधार प्रकाशन
21. कुमार राकेश -नारी वादी विमर्श , पंचकूला आधार प्रकाशन
22. शर्मा सुभाष - भारतीय महिलाओं की दशा, पंचकूला आधार प्रकाशन
23. कात्यायनी - दुर्ग द्वार पर दस्तक, लखनऊ परिकल्पना प्रकाशन
24. करात वृंदा - भारतीय नारी : संघर्ष और मुक्ति, दिल्ली, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन
25. खेतान, प्रभा - बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ, दिल्ली वाणी प्रकाशन
26. प्रसाद कमला - (सं.) - स्त्री मुक्ति का सपना,दिल्ली वाणी प्रकाशन
27. राजकिशोर - स्त्री पुरूष : कुछ पुनर्विचार, दिल्ली वाणी प्रकाशन
28. राजकिशोर - स्त्रित्व का उत्सव, दिल्ली वाणी प्रकाशन
29. पुष्पा मैत्रेयी - सुने मालिक सुनो, दिल्ली वाणी प्रकाशन
30. नसरीन तस्लीमा - औरत के हक में, दिल्ली वाणी प्रकाशन

पात्रिकाऐं :-

1. "पक्षधर" (सं.- विनोद तिवारी) अंक-7, जनवरी 2009
2. "बहुवचन" (सं.- राजेन्द्र कुमार) अंक -25, अप्रैल-जून 2010
3. "हंस" (सं.- राजेन्द्र यादव) जनवरी- फरवरी 2010, मार्च 2001
4. "वसुधा"(सं.- कमला प्रसाद) नवंबर - दिसम्बर 1994

(9) शोधार्थी के प्रकाशित शोध पत्र का विवरण :-

शोधार्थी का अभी कोई शोध पत्र प्रकाशित नही हुआ है ।